Mailed questionaire Merits and demerits

Ans: जब प्रश्नावली को डाक द्वारा सूचनादाता के पास भेजा जाता है। वह उसे भर कर डाक द्वारा वापस करता है। तो इसे Mailed questionaire कहते हैं। इसके सम्बन्ध में Vatsayan (1982) ने बताया है. "डाक प्रश्नावली प्रश्नों की एक मुद्रित सूची है। जिसे द्वारा उत्तरदाताओं को भेजा जाता है। और वे उसे भरने के साथ वापस भेज देता है।"

इस प्रश्नावली के कई गुण हैं जिसके कारण इसका व्यवहार मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों में आवश्यक सूचनाओं को प्राप्त करने के लिये किया जाता है। जिसमें भी निम्नलिखित गुण हैं।

गुण - Merits

(1) व्यापक प्रसार:-

~~इस प्रश्नावली~~ ~~डाक द्वारा~~

इस प्रश्नावली का प्रसार डाक द्वारा ~~कुछ~~ ~~कुछ~~ दूर दूर तक प्रश्नावली भेजकर उत्तरदाताओं से Data प्राप्त किये जाते हैं। दूर के उत्तरदाताओं से इतने कम समय में आवश्यक सूचनायें प्राप्त करना केवल डाक प्रश्नावली से ही सम्भव है।

(2) समय तथा श्रम की बचत

डाक प्रश्नावली द्वारा समय तथा धन की बचत होती है। आमने सामने प्रश्नावली द्वारा दूर रहने वाले सूचनादाताओं से सूचनायें हासिल करने में शोधकर्ता को अधिक समय तथा अधिक श्रम करना होता है। लेकिन डाक प्रश्नावली द्वारा यह काम थोड़े समय और थोड़े श्रम में सम्भव हो जाता है।

(3) मितव्ययता

डाक प्रश्नावली में मितव्ययता का गुण पाया जाता है। आमने सामने संचालित प्रश्नावली में दूरस्थ सूचनादाताओं के पास जाकर उनसे सम्पर्क स्थापित करने तथा प्रश्नावली को भरवाने में काफी खर्च लगता है। लेकिन डाक प्रश्नावली में थोड़ा खर्च करके ही इस काम को करा लिया जाता है। इसलिये Reber (1981) ने कहा है कि "दूरस्थ सूचनादाताओं से आवश्यक सूचनाओं के संग्रह के लिये आमने सामने के अपेक्षा डाक प्रश्नावली कम खर्चीला विधि है।

(4) अधिक स्वाभाविकता

डाक प्रश्नावली में आमने सामने प्रश्नावली के अपेक्षा अधिक स्वाभाविकता पायी जाती है। आमने सामने प्रश्नावली में शोधकर्ता के उपस्थिति होने के कारण सूचनादाता एक तरह के तनाव tension का अनुभव करता है। इस लिये उनके उत्तर अधिक स्वाभाविक नहीं हो पाता है। लेकिन डाक प्रश्नावली में सूचनादाताओं को इस तरह का तनाव का अनुभव नहीं होता है इसलिये उनके उत्तर स्वाभाविक होने की सम्भावना अधिक रहती है।

दोष Demerits:

(1) प्रश्नावली की वापसी

डाक प्रश्नावली में एक दोष यह है कि सूचनादाता डाक द्वारा प्रश्नावली प्राप्त करके शोधकर्ता के पास वापस नहीं भेजता है। Goode and Hatt (1952) के अनुसार कभी कभी वापस होने वाली प्रश्नावली का प्रतिशत 75% तक होता है।

(2) अंशिक भरी गई प्रश्नावली

आमने सामने संचालित प्रश्नावली की अपेक्षा डाक प्रश्नावली में इस बात की सम्भावना अधिक रहती है, कि एक सूचनादाता प्रश्नावली को अधूरा भर कर वापस कर देता है। इससे शोधकर्ता को कि कठिनाई बढ़ जाती है। और आगे का कार्य ठप पड़ जाता है।

(3) सूचनादाता में तत्परता का अभाव

इस प्रश्नावली के साथ एक कठिनाई यह है, कि सूचनादाता के पास डाक द्वारा प्रश्नावली भेजने में इस बात की सम्भावना अधिक रहती है कि सूचनादाता का महत्व बढ़ जाता है। और वे इनके प्रति उदासीन बन जाते है। ऐसी हालत में सही सूचना प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

(4) सूचनादाता का स्थानापन्न :-

डाक प्रश्नावली में एक दोष यह है, कि कभी कभी जिस सूचनादाता से सूचना हासिल करना होता है। और जिसके पास भेजा जाता है। वह उस प्रश्नावली को नहीं भरता है। बल्कि उसके बदले में कोई दूसरा व्यक्ति उसे भर कर वापस कर देता है। फलतः सही सूचना प्राप्त नहीं हो पाता है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है, कि डाक प्रश्नावली के उपर्युक्त गुण तथा दोष है। फिर भी इसका व्यवहार केवल ऐसी परिस्थिति में ही करना चाहिये जहाँ आमने सामने संचालित प्रश्नावली का व्यवहार कठिन हो।

Scanned with CamScanner